Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में महिला आत्मकथाकार

Dr. Meenu*

PhD (Hindi) Gram & Post – Kharwar, District-Rohtak, Haryana

सार – *हिंदी साहित्य का आधुनिक काल तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियों से प्रभावित हुआ। इसको हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ युग माना जा सकता है, जिसमें पद्य के साथ-साथ गद्य, समालोचना, कहानी, नाटक व पत्रकारिता का भी विकास हुआ।*

----------X----------

आत्मकथा का अर्थ होता है- अपनी कथा जब कोई महान व्यक्ति अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का श्रृंखलाबद्ध विवरण स्वयं लिखता है, तब उसे आत्मकथा कहा जाता है। आत्मकथा लेखक को निरपेक्ष और तटस्थ रहना चाहिए। आत्मकथा में आत्म-तत्व सर्वोपरि होता है। यूं तो गद्य-पद्य की सभी विधाओं में यह तत्व अनधाज़ के रूप में बसा रहता है, लेकिन गद्य की सर्वाधिक लोकप्रिय होती जाती विद्या आत्मकथा का तो सारा दारोमदार इसी पर टिका है। जितना सच होगा उसकी आत्मकथा उतनी ही श्रेष्ठ होती है। वैसे तो आत्मकथा लिखते समय बहुत से लेखक अपनी कुछ विशेष बातों को लिखना पसंद नहीं करते, जिसके कारण आत्मकथा की रोचकता कम हो जाती है।

हिन्दी में लिखित कुछ आत्मकथाएं और उनकी लेखिका निम्न है-

स. क्र.	आत्मकथा लेखिका	कृति का नाम
01.	अमृता प्रीतम	रसीदी टिकट
02.	मैत्रेयी पुष्पा	कस्तूरी कुण्डल बसै
03.	कुसुम अंसल	जो कहा नहीं गया
04.	मन्नू भंडारी	एक कहानी यह भी
05.	प्रभा खेतान	अन्या से अनन्या
06.	चन्द्र किरण सक्सेना	पिंजरे की मैना
07.	कृष्णा अग्निहोत्री	लगता नहीं दिल मेरा
08.	सुशीला टाकभौरे	शिकंजे का दर्द
09.	प्रतिभा अग्रवाल	दस्तक जिंदगी की
10.	शीला झुनझुनवाला	कुछ कही कुछ अनकही
11.	रमणिका गुप्ता	हादसे
12.	पद्मा सचदेवा	बूंद बावड़ी

बनारसी दास जैन कृत अर्धकथा हिन्दी की पहली आत्मकथा मानी गई है।

मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में मन्नू भंडारी का बचपन से ही यह विचार था कि समाज और परिवार अलग नहीं है। ज्यादातर गांवों के लोग आपस में ऐसे ही रहते हैं, जो एक दूसरे का दुःख सुख आपस में बांटते थे। बाद में जब मन्नू जी शहर के फ्लैट में रहने लगी, तब उनको लगने लगा कि महानगरों की जिंदगी ने हमें अपने परम्परागत 'पड़ोस कल्चर' से विच्छिन्न करके कितना असुरक्षित और संकुचित बना दिया है। महानगरीय जीवन और आसपास के बारे में वे कहती हैं- आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परम्परागत 'पड़ोस कल्चर' से दूर करके हमें इतना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

मारवाड़ी समाज के लोग इस समाज का सुधार कार्य के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करती हैं- "मेरे कोलकत्ता जाने से काफी पहले से श्री भंवरलाल जी सिंधी के नेतृत्व से मारवाड़ियों के बीच समाज सुधार का एक बड़ा क्रांतिकारी आंदोलन शुरू हुआ था, जिसमें सुशीला काफी ख्याति अर्जित कर चुकी थी। अत्यंत संकटदायक आर्थिक स्थिति में राजेन्द्र ने अपने सबसे छोटे भाई हेमेन्द्र को सहयोग के लिए बुलाया और कुसुम की मृत्यु हो जाने से सबसे छोटी बहन नन्हीं को हॉस्टल से घर लाना पड़ा। इस आर्थिक स्थिति को लेखिका इस प्रकार व्यक्त करती है- "राजेन्द्र अक्षर से निकालकर घर-खर्च के लिए मुझे थोड़ा-बहुत देते थे पर दिल्ली में पांच प्राणियों के परिवार को

www.ignited.in

चलाने की सारी जिम्मेवारी तो मेरे ऊपर ही थी। मैं भी करती तो आखिर क्या करती....''।

प्रभा खेतान अपनी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में लिखती हैं कि हमारे भारतीय समाज में लोग नारी का आदर तभी करते हैं, जब उनके पीछे एक पति का नाम जुड़ा हुआ होता है। चाहे नारी सधवा और या विधवा, समाज में उसकी पहचान उसे उसके पति के नाम से ही मिलती है। अपने यथार्थ चित्रण से उन्होंने दर्शाया- ''मारवाड़ी के घर में जिस दिन से बेटी जन्म लेती है, उसी दिन से मां अपने खुद के दहेज में मिली हुई बहुमूल्य चीजें टीचर के थान, सच्चे जरदोज की साड़ियां, घाघरे, ओढ़नी, चांदी के बर्तन, गहनें सब अलग-अलग रखने लगती है।''

प्रभा खेतान अन्य औरतों की भांति अपनी जिंदगी को भी रो-रोकर नहीं बिताना चाहती थीं। समाज की आंखों में तो नारी सिर्फ रोने के लिए पैदा हुई एक वस्तु है। लेखिका अपनी अम्मा, भाभी, ताई, चाचियां आदि के जैसा नहीं बनना चाहती थी, जिन्होंने सिर्फ रोने के लिए जन्म लिए थे। लेखिका अपना आक्रोश इस प्रकार प्रकट करती है- ''क्या एक बूंद आंसू में स्त्री का सारा ब्राह्माण्ड समा जाएगा ? क्योंकि किसलिए रोना और आंसुओं का समंदर, आंसुओं का दरिया और तैरते हुए हम'' ? लेखिका की सबसे अच्छी और विश्वसनीय सहेली शान्ता, प्रभा जी को समझाते हुए कहती हैं कि भारतीय समाज में ऐसे रिश्ते को कानून के विरूद्ध ही मानते हैं। वह लेखिका को समझाते हुए कहती है- ''भारतीय संविधान की धारा..... के तहत एडल्टी इज़ ए क्राइम, यह एक नाजायज़ संबंध है। उसकी पत्नी यदि पुलिस को खबर कर दे तो तुम और तुम्हारे वे डॉक्टर साहब 24 घंटे के लिए हवालात में बंद कर दिए जाओगे।'' कोई भी नारी स्वतंत्र रूप में सफल नहीं हो सकती। उसकी सफलता परिवार और समाज से जुड़ी हुई है। समाज सिर्फ उन औरतों को सम्मान देता है, जो सती सावित्री और पारम्परिक मूल्यों को मानकर परिवार को चलाती है। वे कहती है-''सती सावित्री, पतिव्रताएं परम्परा को मानकर चलने वाली, अपने आपको पति के चरणों में रखने वाली कमोवेश इन सभी स्त्रियों के मूल्य एक जैसे थे, उनकी ताकत का स्त्रोत उनके पति थे।''

कुसुम अंसल की आत्मकथा 'जो कहा नहीं गया' में सामाजिक जीवन का वर्णन किया गया है, जिसमें कुसुम अंसल जी का जन्म एक प्रतिष्ठित खानदान में हुआ था। उनके दादा जी बैरिस्टर थे और चार साल लंदन में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी। उनके पिता जी खूब पढे-लिखे थे। साहित्य और कला से उनका संबंध बहुत गहरा था। कुसुम अंसल को अपने खानदान की मर्यादा और पिताजी की प्रतिष्ठा के कारण हमेशा आदर मिलता रहा। मगर वह कई बार उनके समाज में अपनी एक पहचान स्थापित करने में एक बाधा बन गया था। इसके बारे में बताते हुए लेखिका एक घटना का वर्णन करती हैं- ''मेरा लेखन तो मेरा एक स्वप्न था, विराट स्वप्न, जिसमें मैं सशरीर चल ही नहीं रही थी, पूरा रम गयी थी। एक बार मैं 'हिंदुस्तान टाइम्स' में साप्ताहिक के लिए एक कहानी लेकर आई थी। वहां के एक सम्पादक ने अविश्वास में कहानी पर लिखे मेरे नाम को और मुझे देखा, खिड़की के बाहर खडे 'अंसल भवन' पर दृष्टि डाली, फिर हंसकर कहा 'इस सेठानी को क्या आवश्यकता पड़ी थी लेखिका बनने की, इन्हें शायद पता नहीं है ये शौंक की चीज़ नहीं, जोखिम का काम है....।''

विवाह के बारे में सोचने से पहले ही लेखिका की शादी तय हो गयी। विवाह के प्रति कुसुम जी की प्रतिक्रिया कुछ ऐसी थी- ''मैंने तो विवाह चाहा नहीं था, अपने आसपास विवाह के अनेक रूप थे, जिन्हें मैं अब तक गहराई से जानने पहचानने लग गयी थी और उस पहचान की प्रतिक्रिया स्वरूप विवाह के नाम से मन में कोई अनुगूंज, कोई सुख-संवाद नहीं उपजता था।''

कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा 'लगता नहीं दिल मेरा' में लेखिका की दोस्ती में न जाति या न धर्म का भेद था। अपने घर वालों, मुख्य रूप से अपनी मां के विरोध के बाद वे अन्य धर्म के लोगों से गहरी मित्रता निभाती थी। एक मुसलमान परिवार के साथ अपनी मैत्री भावना को इस प्रकार स्पष्ट करती हैं- ''अहमद परिवार से गहरा अपनापन जुड़ा। दोनों परिवारों की स्त्रियां बुरका पहनकर ही हमारे घर आती थीं। बस जैसे ही बुरका हटता झिलमिल करता उनका श्रृंगार और सौंदर्य कमरे को रोशन कर देता। बहुत प्यार दिया मेरी इन दोस्तों ने। अम्मा तो इनके घर का पानी भी नहीं पीती थी परन्तु फल वगैरह खा लेती। अहमद परिवार तो बहुत लंबे अरसे तक यहां रहा और आज तक उनके शेष सदस्यों से मेरी दोस्ती बरकरार है।''

सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' में हिन्दु समाज में वर्णन व्यवस्था के चलते जिन जाति वर्गों का सामाजिक और आर्थिक रूप से समाज में पतन और दमन किया गया, वही दलित लोग कहे जा सके। दलित शब्द की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए वह कहती हैं- ''दलित वह व्यक्ति है, जो विशिष्ट सामाजिक स्थिति का अनुभव करता है, जिसके अधिकारों को छीना गया। मात्र जन्म के आधार पर जिनको समाज में एक ही प्रकार का जीवन मिला है। मनुष्य के रूप में अनेक मूल्यों को नकारा गया है। मानव के रूप में जिनके अधिकारों को ठुकराया गया है।''

www.ignited.in

भारतीय समाज में स्त्री का चित्रण इस प्रकार किया गया है कि उसके जीवन का सूत्र आंखों में पानी और आंचल में दूध है। पुरूष निर्मित नियमों, रूढ़ियों से विचलन करने वाली नारी बदचलन कहलायी। परंतु आज क्रांतिकारी कहलाती है। "उपेक्षा, अज्ञातवास एवं दमन की मार इतनी गहरी होती है कि स्त्री अपनी पहचान, अधिकार और निजी सत्ता को भूल गयी या भुला दी गई। सामाजिक, साहित्यिक इतिहास में स्त्री को खदेड़ दिया, यही वजह है कि इतिहास ग्रंथों में स्त्री की सृजनात्मक एवं संघर्षशील इमेज का उल्लेख तक नहीं मिलता।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी की प्रमुख आत्मकथाओं में स्त्री जीवन के यथार्थ का अंकन किया गया है, जिनमें लेखिकाओं के पारिवारिक यथार्थ, सामाजिक यथार्थ, आर्थिक यथार्थ का विशेष रूप से विश्लेषण किया गया है। समाज में अनेक समस्याएं जन्म लेती हैं, चाहे वह स्वयं की हो या समाज की। गरीबी, महंगाई की समस्या, वैवाहिक जीवन का आर्थिक संकट, पति का आर्थिक शोषण, अंधविश्वास, मनौतियां, छुआछूत आदि का विश्लेषण किया गया है। इन सभी महिला आत्मकथाकारों की आत्मकथाएं हम सभी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं।

संदर्भ:

मन्नू भंडारी, एक कहानी यह भी

प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या

कृष्णा अग्निहोत्री, लगता नहीं है दिल मेरा

कुसुम अंसल, जो कहा नहीं गया

डॉ. अशोक तिवारी, प्रतियोगिता साहित्य

सुशीला टाकभौर, शिकंजे का दर्द।

Corresponding Author

Dr. Meenu*

PhD (Hindi) Gram & Post – Kharwar, District-Rohtak, Haryana